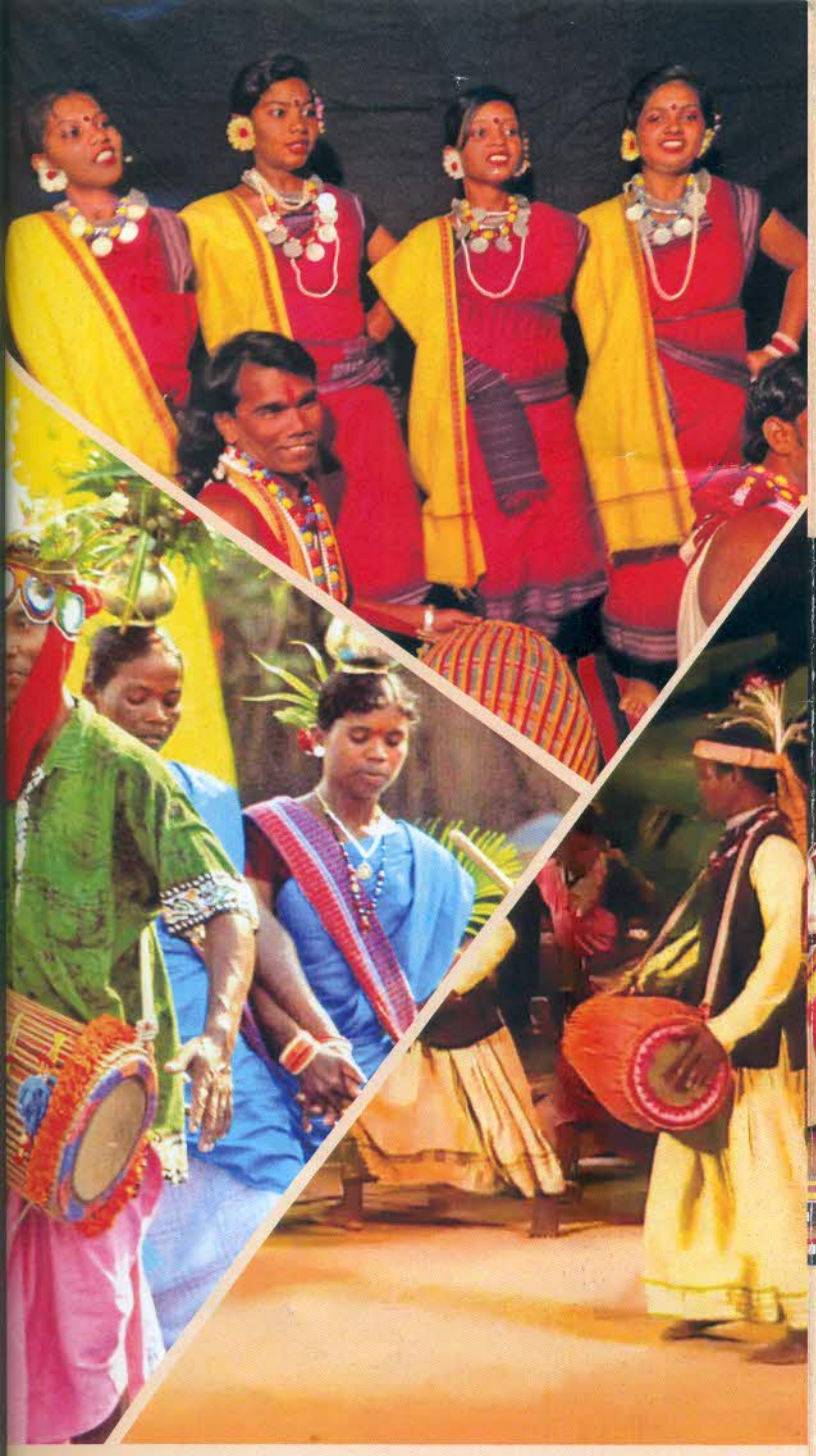

साहित्योत्सव 2016
festival of letters

15-20 February 2016

मातृ धुन पर नृत्य

Dancing to the tune of Mother Earth

कर्मा नृत्य

(बिंझल जाति का पारंपरिक नृत्य,
पद्मपुर संगीत समिति, ओड़िशा की प्रस्तुति)

Karma Dance

(Ritual dance of Binjhal tribe
by Padampur Sangeet Samiti, Odisha)

15 February 2016 at 6.00 p.m.
Rabindra Bhawan Lawns

हित्य अकादेमी
न्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग,
विल्ली 110 001
भाष : 011-23386626/27/28
क्स : 091-11-23382428
मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
साइट : www.sahitya-akademi.gov.in

SAHITYA AKADEMI
Rabindra Bhawan, 35 Ferozeshah Road,
New Delhi - 110001
Phone: +91 11 23386626-28
Fax: +91 11 23382428
Email: secretary@sahitya-akademi.gov.in
Website : www.sahitya-akademi.gov.in

Karma Dance: Karma is a primitive fertility cult dance practiced by many aboriginal tribes of Odisha and Chhattisgarh. The Karma festival is performed as a tribute to Karamsani on the 11th day of bright fortnight in the month of Bhadra. Karma is very special to the Binjhal of Borasambar of Bargarh district. They believe their gods participate in their dance. During the triennial Daliapat Yatra, scores of villages indulge in night-long karma dance to accord welcome and bid farewell to the deities. The present dance item is based on the rituals associated with Karma puja. The holy Halan branch is installed ceremoniously on the sacred platform and after invoking the deities the traditional dance begins to the special beats of Mandal and cymbals. The song and dance narrates the story of Karma worship while recreating the Binjhal world view of dancing to appease the gods of earth, fire, air and water.

Karma Festival: The festival of Karma has been related to the harvest and to the Karam tree. It symbolizes fertility, prosperity and all that is auspicious. This festival falls in the month of August/September (11th moon of the Hindu month of Bhadrapad). The name Karma is drawn from the name of a tree "Karam".On this day people go in the forest to collect fruits and flowers, and they worship Karma Devi, a goddess who is represented with a branch of karam tree. The branches are garlanded on the next day. Offerings of flowers, rice and curd are made to them. Red colored baskets filled with grains are placed before the branches. Barley seedlings are distributed among the young people, who wear it on their heads. The branches are worshipped and their blessings sought. As per the legends of Karam Devi, she is believed to be the goddess of wealth and children.

Padampur Sangeet Samiti: Padampur Sangeet Samiti is a registered organisation devoted to the restoration of the glorious cultural heritage of Borasambar region. It has worked on the Gandabaja tradition, the ethnic caste music essential in all social functions of the village, and have arranged colourful pageantry of hundreds of folk musicians playing the Dhol, Nishan, Tasha and Muhuri in all major towns of the state. They are specialized unit in the performance of Karma, based on the Binjhal community dance and Dalkhai, the famous Sambalpuri dance form.

कर्मा नृत्य : कर्मा उपज एवं प्रजनन से जुड़ा एक आदिम पंथ–नृत्य है, जिसे ओड़िशा और छत्तीसगढ़ की कई आदिवासी जनजातियों द्वारा किया जाता है। कर्मा महोत्सव भाद्र के महीने में शुक्ल पक्ष के 11वें दिन कर्मसानी को श्रद्धांजलि देने के लिए मनाया जाता है। कर्मा बरगढ़ ज़िलांतर्गत बोरासंबर की बिंझल जनजाति के लिए बहुत विशेष है। उनका मानना है कि उनके भगवान उनके नृत्य में शामिल होते हैं। तीन वर्ष में डालियापट यात्रा के दौरान गाँव वाले रातभर कर्मा नृत्य में मगन रहकर देवताओं का स्वागत करते हैं और उन्हें विदाई देते हैं। यह नृत्य प्रस्तुति कर्मा पूजा से जुड़े रीति–रिवाजों पर आधारित है। पवित्र हलन शाखा को औपचारिक रूप से पवित्र मंच पर स्थापित किया जाता है तथा मांदल और झांझ की विशेष ध्वनियों से देवताओं को पारंपरिक नृत्य द्वारा जाग्रत किया जाता है। धरा, अग्नि, वायु और जल देवताओं को प्रसन्न करने की दृष्टि से बिंझल संसार के पुनः सृजन के बारे में गीत तथा नृत्य द्वारा कर्मा पूजा की कथा सुनाई जाती है।

कर्मा उत्सव : कर्मा उत्सव फ़सल तथा कर्म वृक्ष से संबंधित है। यह उर्वरता, समृद्धि तथा समस्त प्रकार के मंगल का प्रतीक है। यह उत्सव अगस्त/सितंबर (हिंदुओं के भाद्रपद माह के 11वीं चंद्र रात्रि) में मनाया जाता है। कर्मा नाम "कर्म" नामक वृक्ष से लिया गया है। इस दिन लोग जंगल में जाकर फल–फूल एकत्रित करते हैं और कर्मा देवी की उपासना करते हैं; कर्मा देवी कर्म वृक्ष की एक शाखा का प्रतिनिधित्व करती है। अगले दिन शाखाओं को फूल–मालाओं से सजाया जाता है। उन पर फूल, चावल तथा दही चढ़ाया जाता है। शाखाओं के आगे धान से भरी लाल रंग की टोकरियाँ रखी जाती हैं। जौ के पौधों को युवाओं में वितरित किया जाता है, जिन्हें वे अपने मस्तक पर धारण करते हैं। शाखाओं की पूजा की जाती है तथा उनसे आशीर्वाद माँगा जाता है। कर्मा देवी से जुड़ी किंवदंतियों के अनुसार उन्हें धन तथा बच्चों की देवी माना जाता है।

पद्मपुर संगीत समिति : पद्मपुर संगीत समिति, बोरासंबर क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत के लिए समर्पित एक पंजीकृत संगठन है। इसने गंड़ाबजा परंपरा तथा गाँव के समस्त सामाजिक कार्यों में अनिवार्य जातीय संगीत पर कार्य किया है तथा राज्य के सभी प्रमुख नगरों में ढोल, निशान, ताशा तथा मुहुरी के सैकड़ों लोक संगीतज्ञों के रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन किया है। बिंझल समुदाय के नृत्य पर आधारित कर्मा तथा लोकप्रिय संबलपुरी नृत्य विधा डालखई की प्रस्तुति में इन्हें दक्षता प्राप्त है।